

लगातिमान स्थाप पान विश्वन्य देवामि नर्व अकात दशुत्तुत ल पाय पामात स्थवा युल्क यादावा यात विश्व विश्व क्षणाति विश्व क्षणाति वृद्ध पान ल ज्ञान विश्व क्षणाति विश्व क्षणाति वृद्ध पान ल ज्ञान विश्व क्षणाति विश्व क्षण

যদি লবিধা কে কোন একারের দায় কার থাকা কি হসুদ্বেরিত থাকা একাল পায় চাধা তইনে ভয়াবিশানশণ প্রত্যে বৃত্তি গ্রহণ চুল্লন শং ছাইন লাগতে আশিকেক। একাল ফান্তে যে পুর্ববর্তী নামের শেষ ভাগতে কবির বিব শিল্লীয় নিনিকার ধানিকার ধানিকার একাল কবির বিব শ্রিম একাই বাকিশ্বটি।

এতদার্থে স্থেতছায় সুজ্ঞানে সুশ্য শরীরে অনেরর বিনা প্ররোচনায় দলিলের নিসিত্ত স্মৃত্ত টাকা প্রহনে এই বিএক্ষার সাফ কবালা পত্র সম্পাদন করিয়া দিল্যে। ইটি চারিখ বাংলা ১৩৯২ সন্বর ৬ই পৌষ, ইংরেজী ২২/১২/১৯৮৫ সন।